आओ, बीज बटोरें!

Author: Neha Sumitran
Illustrator: Archana Sreenivasan
Translator: Aditi Pathak

पठन स्तर ३

चीजें इकट्ठी करना टूका और पोई को बहुत पसंद है। नदी के किनारे बीने गए चिकने कंकड़, नागफनी के गोल और गुदगुदे पत्ते, सुर्ख लाल रंग के बटन जो उनकी स्कूल यूनिफॉर्म से गिरे हों - टूका और पोई सब बटोर लेते हैं। रोज़ ही, स्कूल के बाद, वे नदी के किनारे झुके हुए नारियल के पेड़ के पास मिलते हैं और अपने सबसे प्यारे दोस्त का इंतज़ार करते हैं।

ठीक 5 बजते ही, इंजी, स्कूल की किसी पुरानी बस की तरह दौड़ता-हांफता चला आता है। इंजी, चॉकलेटी रंग की आंखों वाला उनका प्यारा पिल्ला है, जिसकी पूँछ हमेशा हिलने के बावजूद कभी नहीं थकती।

टूका, पोई और इंजी, एक साथ टहलते हुए, सिर झुकाए, सड़क और उसके किनारों पर, घास में और काई से ढकी चट्टानों में कुछ मज़ेदार चीजों को ढूंढने में लगे रहते हैं। लेकिन उन्हें सबसे ज़्यादा मज़ा बीजों को इक्ट्ठा करने में आता है।

टूका और पोई ने लेडीबर्ड गुबरैला की तरह दिखने वाले चमकीले लाल बीज, कपड़ों में चिपक जाने वाले गोखरू और कॉपर-पॉड पेड़ की बड़ी आकार वाली फलियाँ इकट्ठी कीं हैं।

जब टूका और पोई इन्हें हिलाते हैं, तो इन फलियों से **छन्नो-छन्न-छन्न**की सुरीली ध्वनि निकलती है। पोई, इन फलियों को हिलाकर, उनकी ताल पर बहुत मज़ेदार गीत बनाती है।

"इंजी हमारा दुलारा है,
मेंडक इसे लगता प्यारा है,
चींटी, पक्षी, घोंघे - इसे भाएं खूब,
पर सबसे प्यारी लगे इसे अपनी पूँछ!"

वह इस गीत को बार-बार दोहराती रेहती है, जिसे सुनकर टूका को बहुत हंसी आती है और इंजी भी खुश होकर भोंकता है।

एक दिन टूका, पोई और इंजी, रोज़ कि तरह, इमली के पेड़ के नीचे बैठे हुए थे। टूका का पसंदीदा बीज, इसी पेड़ से मिलता था।

उसे पेड़ पर लगने वाली इमली का खट्टा-मीठा स्वाद उसे बेहद पसंद था। वह उसे चूसते हुए मज़ेदार चेहरे बनाता था और उसके बाद उसमें अंदर से भूरे रंग का चमकदार बीज निकालता था। इमली के चटपटे स्वाद से टूका की गर्दन के रोएं खड़े हो जाते थे।

तभी अचानक उन लोगों को एक अजीब सी आवाज़ सुनाई दी – “हैलो।”

टूका और पोई ने एक-दूसरे को हैरानी से देखा। उन्हें आस पास कोई नहीं दिखाई दे रहा था। तभी उन्हें दुबारा वह आवाज सुनाई दी, "यहां ऊपर देखो, ऊपर.....।”

टूका और पोई ने ऊपर-नीचे, अपने आसपास, चारों ओर देखा, लेकिन उन्हें कोई भी ना दिखा।

“मैं बोल रहा हूँ, पच्चा, इमली का पेड़।“ इंजी, ज़ोरो से भौंकने लगा और अपनी पूँछ को बहुत तेज़ी से हिलाने लगा। उसकी पूँछ से **फट..फट..फट..** की आवाज आने लगी थी।

तभी पच्चा ने कहा, “इंजी, हैलो.. इन दिनों तुम नज़र नहीं आते हो!”
टूका और पोई बिना हिले खड़े थे। उनकी आंखें, फटी की फटी रह गईं और उनका मुंह, खुला का खुला।

आखिर, पोई झेंपती हुई मुस्कराई और बोली - “हैलो, पच्चा। आपसे मिलकर मुझे बहुत खुशी हुई। मेरा नाम पोई है।“

यह कहकर पोई इमली के पेड़ से गले लग गई। पच्चा खिलखिलाया, "आज से पहले मुझे कभी किसी छोटी लड़की ने गले नहीं लगाया है। मुझे गुदगुदी हो रही है!"

"और हम भी इससे पहले कभी किसी बोलने वाले पेड़ से नहीं मिले!" टूका ने चहकते हुए कहा। "इसलिए, हम सभी के लिए कुछ न कुछ नया है।" इतना सुनकर, पच्चा जोर से हंसा, और उसके हँसते ही, उसके डालों की सारी पत्तियां सुर्ख हरी हो गई।

पच्चा ने पूछा,"वैसे, तुम दोनों आज यहां क्या कर रहे हो?" टूका और पोई ने कहा, "हम चीज़ें इकट्ठी कर रहे हैं!"

टूका और पोई ने पच्चा को फूलों, चिकने पत्थरों और पकी हुई इमली से भरा अपना बैग दिखाया।

“अरे वाह, तुम लोगों ने तो बहुत सारे बीज इकठ्ठे कर लिए हैं", बैग देखकर पच्चा ने कहा। "वैसे क्या तुम लोग यह जानते हो कि ऐसे ही इमली के एक छोटे बीज से मैं बना हूँ? और अब मुझे देखो, कितना बड़ा हो गया हूँ। मेरी ढ़ेर सारी शाखाएं हैं जिन पर बहुत सारी गौरेया, गिलहरी और कौओ रहते हैं।“

टूका ने कहा, “पच्चा, तुम्हारी बात मुझे समझ नहीं आई, ठीक से समझाओ।“

जोश में आकर इंजी **भौं, भौं, भौं**.... कर उत्सुकता से भौंक रहा था जैसे मानो वह भी जानना चाहता हो कि पच्चा क्या कह रहा है।

पच्चा ने सभी को समझाया कि,“तुम लोगों ने जिन बीजों को इक्ट्ठा किया है, ये सभी पेड़ों के बच्चे हैं।“

“वाकई में...?“ पोई ने अपनी भवें ऊपर चढ़ाते हुए आश्चर्य से पूछा।

“क्या सारे बीज इमली के पेड़ ही बनते हैं?“ पोई ने पूछा और याद करने की कोशिश की कि घर में उसके पास कितने तरीके के बीज थे।“अरे नहीं! बीजों से तो कई प्रकार कीं जीवंत चीज़ें विकसित होती हैं,“ पच्चा ने उत्तर देते हुए कहा।

“क्या तुम्हारे पास बैग में कोई फल है?“ पच्चा ने पूछा। टूका ने अपने बैग से एक छोटा, लाल सेब और एक पका हुआ केला निकाला।

पच्चा ने समझाया, “तुम इस सेब को खाना शुरू करो जब तक कि इसके बीच वाले हिस्से तक न पहुंच जाओ। सेब के बीच में तुम्हे छोटे-छोटे भूरे रंग के बीज दिखेंगे।“

“ये बीज, छोटे चमकदार कीड़ों की तरह होते हैं!“ पोई ने कहा।

“हैं न प्यारे? वैसे ये बीज ही बड़े होकर सेब का पेड़ बनते हैं,“ पच्चा बोला।

पच्चा ने आगे समझाया, “अब इस केले को बीच से आधा करो।“

“मुझे केले के बीज दिखाई दे गये, ये तो सोते हुए गोजर, वो कई पैरों वाले कीड़े, की तरह दिख रहे हैं,“ टूका उत्साहित होकर बोला।

पच्चा ने समझाते हुए बताया, “बीज, सभी आकृति और आकार के होते हैं।“ वहीं, इंजी, सेब का बचा हुआ हिस्सा खाने में जुटा था। “क्या ये सभी पेड़ों के बच्चे हैं?’’ पोई ने पूछा।

“हां! और हर बीज में अंदर एक नन्हा पौधा होता है जो बाहर आने का इंतजार करता रहता है और दुनिया देखना चाहता है,“ पच्चा ने कहा।

शाम को टूका, पोई और इंजी घर वापस जाते हुए सड़क के किनारे के सभी पेड़ों को बड़े ध्यान से देखते हुए चल रहे थे।

नारियल के पेड़ की पत्तियां कितनी सुडौल थीं, ऐसा लग रहा था कि हवा में नाच रही हों। नीले-नीले आसमान में लाल गुलमोहर के फूल कितने निराले लग रहे थे। सुंदर सी खुरदुरी छाल वाला आम का पेड़ कितना अच्छा लग रहा था।

और सबसे अद्भुत बात यह थी कि इतना बड़ा और महत्वपूर्ण पेड़ एक नन्हे से बीज से बनता है।

अब भी टूका, पोई और इंजी हर शाम स्कूल के बाद मिलते हैं। लेकिन अब, टूका और पोई, उन चीजों को इक्ट्ठा करते हैं जिनमें वे पेड़ उगा सकें। पुराने जूते, नारियल का कवच, यहां तक कि पानी की पुरानी बोतलें – सब कुछ, जिन्हें गमले के रूप में इस्तमाल किया जा सके।

और कभी-कबार वे पच्चा पेड़ से बातें करने भी रुक जाते हैं।

पच्चा के सुपर बीजों का गाइड

हैलो! मेरा नाम पच्चा है, मैं एक इमली का पेड़ हूँ। लेकिन मेरे और भी कई नाम हैं। हिंदी में मुझे इमली, तमिल में पुली और बंगाली में तेंतुल कहा जाता है। वैज्ञानिक मुझे, *टैमरिंडस इंडिका* कहते हैं। चलिए मैं आपको अपने कुछ अन्य बीज मित्रों से मिलवाता हूँ। शायद उनमें से कईयों को आपने अपने भोजन की थाली में ज़रूर देखा होगा।

मिर्च

सामान्य नाम: लाल मिर्च

वैज्ञानिक मुझे कहते हैं: कैप्सिकम एन्नंम

मिर्च, हर आकार, रूप और रंग की होती हैं और पूरे विश्व में इनका उत्पादन होता है। इसके बीज, छोटे, गोल और चपटे होते हैं और इनका इस्तेमाल दाल या भाजी में चटपटापन लाने के लिए किया जाता है। जब आप इन्हें छुएं तो सावधान रहें, ये आपकी उंगलियों में जलन पैदा कर सकतीं हैं।

कापी

सामान्य नाम: कॉफी

वैज्ञानिक मुझे कहते हैं: कॉफिया अरेबिका

कॉफी के बारे में तो आप सभी जानते होंगे, जिसे आपके मम्मी-पापा हर सुबह पीते हैं? ये कॉफी बैरीज़ से बनती है। बैरीज़ से मिलने वाले दाने, सूखे होते हैं जिन्हें भूनने के बाद पीसकर, पाउडर बना दिया जाता है। दक्षिण भारत के पहाड़ी क्षेत्रों में कॉफी के बागान हैं।

कटहल

सामान्य नाम: कटहल

बैरीज़, सेब, केला, तरबूज और कटहल- इन सभी फलों में बीज होता है। कुछ बीजों को हम खा नहीं सकते हैं जैसे कि आम की गुठली। लेकिन कई बीज; जैसे कटहल के बीज; इन्हें पानी में भिगाने के बाद सब्जी बनाकर खाया जा सकता है।

नारियल

सामान्य नाम: नारियल

वैज्ञानिक मुझे कहते हैं: कोकोस न्यूसीफेरा

कठोर भूरे रंग के नारियल का हर हिस्सा, हमारे लिए उपयोगी होता है। उसके बाहर वाले बालों के हिस्से से रस्सी बनाई जाती है, वहीं अंदर का नरम सफेद हिस्सा कई प्रकार के भोजन में इस्तेमाल किया जाता है और नारियल पानी, मज़ेदार पेय होता है, विशेषरूप से उस समय, जब बाहर बहुत गर्मी होती है। क्या आपको मालूम है कि आप अपने बालों में जो तेल लगाते हैं, वो कहां से आता है? वह तेल भी नारियल से ही निकाला जाता है।

मूंगफली

सामान्य नाम: मूंगफली

वैज्ञानिक मुझे कहते हैं: अराकिस हाइपोगेईया

सभी पौधों को मिट्टी से बहुत प्रेम होता है, लेकिन मूंगफली को धरती से ज्यादा ही प्यौर है, इसी कारण ये जमीन के अंदर ही बढ़ती हैं। इसके छोटे-छोटे दाने एक कवर में बंद होते हैं और खाने में बेहद स्वादिष्ट होते हैं। इन दानों को कच्चा, उबालकर और भूनकर खाया जाता है।

चावल

सामान्य नाम: राइस या चावल

वैज्ञानिक मुझे कहते हैं: ऑरिज़ा सटाईवा

चावल, सबसे लोकप्रिय अनाजों में से एक है। जहां तक मुझे मालूम है, चावल, किसी अन्य अनाज की बजाये भारतीय घरों में, सबसे ज़्यादा खाया जाता है। जब चावल पौधे पर लगा होता है तो उसके दानों पर जैकेट की तरह एक रफ, भूरे रंग का कवर चढ़ा रहता है जिसके कारण इसके दाने अंदर सुरक्षित और साबुत बने रहते हैं।

चॉकलेट

सामान्य नाम: चॉकलेट

वैज्ञानिक मुझे कहते हैं: थियोब्रोमा ककाओ (जिसका अर्थ होता है - देवताओं का भोजन)

इसमें कोई संदेह नहीं है कि चावल सबसे लोकप्रिय अनाज है लेकिन ककाओ भी लोगों की खास पसंद है – खासकर टूका और पोई की। चॉकलेट ककाओ के बीजों से बनती है। हर ककाओ फल में 30-50 बीज होते हैं जिन्हें भूना जाता है और फिर पीसकर, चीनी व दूध में मिलाकर स्वादिष्ट चॉकलेट बार बनाया जाता है।

PRATHAM BOOKS storyweaver

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Story Attribution:

This story: आओ, बीज बटोरें! is translated by Aditi Pathak . The © for this translation lies with Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: 'Let's Go Seed Collecting!', by Neha Sumitran . © Storyweaver, Pratham Books , 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Other Credits:

This book was first published on StoryWeaver, Pratham Books. The development of this book has been supported by Oracle Giving Initiative.

Illustration Attributions:

Cover page: Boy, girl and dog - the seed collectors, by Archana Sreenivasan © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: Girl looking at a button, boy waving, dog running, by Archana Sreenivasan © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: Children and dog walking downhill, by Archana Sreenivasan © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: A tree and flowers, by Archana Sreenivasan © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: Laughing boy and girl with dog trailing behind them, by Archana Sreenivasan © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: Girl reaching out to tree, dog chasing butterfly, boy eating tamarind, by Archana Sreenivasan © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: Boy, girl and dog under a tree, by Archana Sreenivasan © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: Boy, girl and dog looking up at the tamarind tree, by Archana Sreenivasan © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: Boy laughing, girl hugging a tree, happy dog by Archana Sreenivasan © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: Boy showing a basket of flowers to the tamarind tree, by Archana Sreenivasan © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

ORACLE

The development of this book has been supported by Oracle Giving Initiative.

PRATHAM BOOKS storyweaver

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Illustration Attributions:

Page 11: plant texture, by Archana Sreenivasan © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 12: Curious boy, girl and dog , by Archana Sreenivasan © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 13: Girl eating an apple, boy holding a banana , by Archana Sreenivasan © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 14: Boy looking at a banana, girl feeding a dog an apple, by Archana Sreenivasan © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 15: Girl, boy and dog around different trees, by Archana Sreenivasan © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 16: Plants being grown in pots, pans and buckets, by Archana Sreenivasan © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 17: A tamarind tree, by Archana Sreenivasan © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 18: Red chilli, jackfruit and coffee, by Archana Sreenivasan © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 19: Coconut and peanut , by Archana Sreenivasan © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 20: Rice and chocolate , by Archana Sreenivasan © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

ORACLE

The development of this book has been supported by Oracle Giving Initiative.

आओ, बीज बटोरें!

(Hindi)

चलिये, टूका, पोई और उनके प्यारे दोस्त इंजी के साथ बीज इकट्ठे करने चलते हैं। कहानी शुरू होती है, जब ये तीनों पच्चा नाम के एक इमली के पेड़ से मिलते हैं...

यह पठन स्तर ३ की किताब है, उन बच्चों के लिए जो खुद पढ़ने को तैयार हैं।

PRATHAM BOOKS storyweaver

Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!